PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

जुलाई 2006 ISSUE 0706 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

जीवन-धाम की 15वीं वर्षगाँठ बड़े धूम-धाम से मनी!

जीवन-धाम की15वीं वर्षगाँठ पर दिल्ली महाधर्मप्रान्त के महाधर्माध्यक्ष माननीय विन्सेन्ट एम. कॉन्सेसाव अन्य11 पुरोहितों के साथ जीवन-धाम में जुलाई6 को धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाने आए।

"विश्वमण्डल के प्रभु! कितना रमणीय है तेरा मन्दिर!.....तेरे मन्दिर में रहने वाले धन्य हैं। वे निरन्तर तेरा स्तुति गान करते हैं।" (स्तोत्र 84:3,5) वाकई में जुलाई 6, 2006 के दिन जब जीवन–धाम अपनी***15वीं वर्षगाँठ*** मना रहा था तो साज–सजावट व इतने मान्यवर पुरोहितों और धर्मबहनों की उपस्थिति में "जीवन–धाम" एक बड़े गिरिजाघर जैसा भव्य व महिमामयी बन गया था। उपस्थित लोगों की भारी संख्या भी इस बात का समर्थन करती थी। और जब प्रभु येशु ने पहले ही सभी आने वालों को यह प्रतिज्ञा दी थी कि उस दिन कोई खाली हाथ नहीं जाएगा, तो फिर कमी किस बात की थी। उस दिन की खुशी की दो प्रमुख विशेषताँए थी। पहली–जीवन–धाम में प्रार्थना (मकान नं० 626/सैक्टर–22) को शुरु हुए 15 वर्ष पूरे हो गये, दूसरी–इस घर में पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाना सन्1986 में इतवार के दिन से शुरु किया गया था, अर्थात यहाँ पर 20 साल से पवित्र मिस्सा बलिदान हर इतवार शाम को चढ़ाया जा रहा है। अब तो प्रभु की कृपा से केवल सोमवार व शनिवार छोड़कर हर रोज पवित्र मिस्सा बलिदान यहाँ चढ़ाया जा रहा है। इस के लिए हमारे पल्ली पुरोहित फा० जोन्सन, फा० अन्थोनी, फा० टोमी, फा० अल्बर्ट व अन्य पुरोहितों ने स्वेच्छा से अपना समर्थन व सहयोग दिया है और हम उनके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते है। इसके द्वारा "जीवन–धाम" की प्रार्थना की शक्ति की वृद्धि हुई है और सभीं के लिए रोग चंगाई, कृपाओं व पाप मुक्ति का द्वार खुल गया है। ऐसा सौभाग्य प्राप्त करने वाले धन्य हैं। Praise the Lord !

15वीं वर्षगाँठ के शुभअवसर पर दोपहर 12:15 बजे महाधर्माध्यक्ष विन्सेन्ट का कॉनसेसाव "जीवन–धाम" में अपना बहुमूल्य समय निकालकर धन्यवाद का मिस्सा बलिदान चढ़ाने आये जिनका सहयोग देने के लिए वेदी के तीनों और दिल्ली, फरीदाबाद व गुडगाँव से आये अन्य ग्यारह पुरोहित भी शामिल थे। फादर जॉर्ज पनक्कल, फा० क्लॉड डिसूज़ा, फा० अरनॉल्ड डेविड़, फा० जॉर्ज मनिमला, फा० थोमस चम्बाकाट्ट, फा० एन्थोनी फ्रांसिस, फा० अल्बर्ट फ्रांसिस, फा० टोमी, फा० मैक्सिम पिंटो, फा० वर्गिस, और हमारे पल्ली पुरोहित फा० जोन्सन केय़क्केवीटिल इस मिस्सा बलिदान को चढ़ाने, सबके लिए प्रार्थना करने व प्रोत्साहन देने के लिए आनन्द व भक्ति के साथ शामिल हुए। माननीय महाधर्माध्यक्ष का स्वागत एक छोटे से नृत्य के साथ फूलों की माला पहना

नित्य सहायक माता से एक नोवेना प्रार्थना

हे नित्य सहायक माता, तेरी शरण आये इस दुःखी, पापी को स्वीकार कर। मैं तुझसे अपेक्षा करता तथा तुझ पर भरोसा रखता हूँ क्योंकि तू ही मेरा शरण और आशा है। हे दयासागर माँ, मुझ पर अपनी दया दृष्टि कर, अपना हाथ आगे बढ़ा

"मेरे मुख से निकलने वाला शब्द सच्चा और अपरिवर्तनीय है। मैं शपथ खाकर यह कहता हूँ: हर धुटना मेरे सामने झुकेगा। हर कण्ठ मेरे नाम की शपथ लेगा।" (इसायाह45:23)

कर मुझ पापी की सहायता कर, जो तुझसे प्रेम रखता व सदैव तेरा भक्त रहने की प्रतिज्ञा करता है। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मेरी अनन्त मुक्ति के लिए अपनी दया से सब कृपाँए तेरे हाथों में सौंप दी हैं। शैतान का सिर कुचलने वाली हे माँ, जब तू मेरे साथ है तब मुझे डरने की कोई बात नहीं है। मुझे केवल यही डर है कि मैं परीक्षा में गिरकर तुझे याद करने में न चूँकूँ और अपनी आत्मा न खो दूँ। इसलिए इस कृपा के लिए कि मैं सदा तुझे याद करुँ, तेरा प्यारा नाम लूँ तथा ईश्वरीय विश्वास व प्रेम की कृपा प्राप्त करुँ, हे नित्य सहायक माता! तुझसे अपेक्षा व विनय याचना करता हूँ । आमेन।

मिस्सा के बाद "जीवन–धाम की 15वीं वर्षगाँठ का एक बड़ा विशेष केक जीवन–धाम के परिवार के साथ धर्माध्यक्ष ने काटा। बाद में उन्होंने सभी पुरोहितों व धर्मबहनों के साथ, जो विभिन्न समुदायों से आई थीं, मिलकर प्रीतिभोज किया। सभी विश्वासियों को उन्होंने अपनी आशीष दी।

*इन सब विशेष कृपाओं के लिए हम पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते है जिनके अनुग्रह के बिना इच्छा के बिना कुछ भी संभव नहीं। विभिन्न चिन्हों, चमत्कारों, रोग चंगाई, पवित्र दर्शनों वचन व पवित्र वाणी द्वारा ईश्वर ने अपनी महिमा व शक्ति **"जीवन-धाम"** में प्रकट कर बीते वर्ष में हज़ारों अविश्वासियों को अंधकार से निकालकर अपनी कृपा द्वारा ज्योति की संतान बनाया है। इसके लिए प्रभु को हम लाखो बार धनयवाद देते हैं। यह उसका प्रेम ही है जो मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि पिता आकर्षित न करे तो वह अन्धकार में ही भटकता फिरेगा और अपनी आत्मा को खो देगा। प्रभु येशु ने कहा, **"कोई मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक कि पिता, जिसने मुझे भेजा, उसे आकर्षित नहीं करता।" (योहन 6:44)** हम प्रार्थना करें कि भविष्य में ईश्वर लाखों और अन्धकार में पड़े दुःखी, पीडित व रोगी अविश्वासियों को अपने चरणों पर लाये, उन्हें अपने वचन व चमत्कारों द्वारा दृढ़ विश्वास का वरदान दे तथा उन्हें अपनी शान्ति, प्रेम व आनन्द में एक बनाये रखे। आमेन।*

कर किया गया। सुरीले व आनन्ददायक भजनों से भरे इस मिस्सा के बीच उन्होंनें ज्ञानवर्धक व प्रेरणात्मक उपदेश दिये। इससे पहले मिस्सा के शुरुआत में ही फा० अरनॉल्ड डेविड़ ने जीवन–धाम की उत्पत्ति, इन वर्षों यहाँ हुऐ मुख्य चमत्कारों व घटनाओं का संक्षिप्त में विवरण दिया और सभी में ईश्वरीय श्रद्धा व कृतज्ञता जागृत की। माननीय धर्माध्यक्ष ने सर्वप्रथम सभी को इस दिन की खुशी की बधाई दी व प्रभु को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इस संस्था द्वारा बहुत लोगों को ईश्वर ने वरदान दिये, चंगाई व आशीष दी है। ईश्वर लोगों को अपने कार्यों के लिए चुनता और अपने मुक्ति का कार्य उनके द्वारा आगे बढ़ाता है। उन्होंने प्रार्थना की कि इस संस्था में जो कार्य किये जा रहे हैं, उन कार्यों में इसके कार्यकर्ता आगे बढ़ते जायें, उनके द्वारा और अधिक लोगों को प्रभु येशु रक्रीस्त की जानकारी मिले जिससे उनके जीवन में प्रेम, आनन्द और शान्ति बनी रहे, वे इस सुसमाचार को बाँटें, तथा ईश्वर की कृपा से रक्रीस्त में उन्हें नया जीवन मिले– ये सभी आशीष ईश्वर उन्हे प्रदान करे। अपने प्रवचनों में उन्होंने प्रेम, क्षमाशीलता व सच्चे विश्वास के मूल्यों पर ध्यान केन्द्रित किया और प्रभु येशु के चमत्कारों के पीछे छिपी ईश्वरीय पद्धति को प्रकाशित किया। पवित्र मिस्सा बलिदान के दौरान ही अन्तिम आशीष से पहले ईश्वर के महान् कार्यों का बखान करते हुए सबने मिलकर ईश्वर की स्तुति की।

मतवाले बनो-पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, पर शराब पीकर नहीं

*सन्त पौलुस एफेसियों के पत्र में लिखते हैं, "अंगूरी पीकर मतवाले नहीं बनें, क्योंकि इस से विषय–वासना उत्पन्न होती है, बल्कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जायें। मिलकर भजन, स्तोत्र और आध्यात्मिक गीत गायें; पूरे हृदय से प्रभु के आदर में गाते–बजाते रहें।" **(एफेसि 5:18-19)***

हाँ, यही प्रभु हम सभी से चाहते हैं कि हम मधुर भजनों को गाकर, गुनगुनाकर उनमें लीन रहें और सब चिन्ताँए प्रभु पर छोड़ दें, सब कुछ उनके चरणों में समर्पित कर दें। इसी के द्वारा प्रभु हमसे प्रसन्न होकर हमें अनगिनत वरदान, अपना प्रेम, शान्ति और आनन्द हम पर उँडेल देंगे। हृदय से विश्वास, विनम्रता व कृतज्ञता की भावना के साथ हम प्रार्थना व स्तुति में लगे रहें तो हमे किसी बात की चिंता या व्याकुलता न होगी। काश ऐसा सभी मनुष्य कर पाते और इन बातों की गहराई समझ पाते!

प्राकृत मनुष्य इस संसार की वस्तुओं या व्यक्तियों से दिल लगा लेता है और उसे सबसे अधिक प्यार करता है, उससे वह शान्ति व आनन्द व तृप्ति पाने की आशा रखता है। पर यह सब व्यर्थ है। सभी वस्तुएँ नश्वर व क्षणभँगुर हैं – चाहे वह पैसा हो, सोना हो, चाँदी हो, हीरा हो, शराब हो या कोई ड्रग्स हो या कोई भी व्यक्ति हो। और सभी वस्तुँए ईश्वर की या मनुष्य की सृष्टि होने के नाते ईश्वर की बराबरी कभी नहीं कर सकते। उस सवोच्च सृष्टिकर्ता की, जिसने मुझे और आपको बनाया, जिसने ये सारा संसार बनाया, क्या वह मनुष्य के इस लगाव से कभी प्रसन्न होगा। नहीं, यह ईश्वर की प्रथम आज्ञा से को भंग करता है और ऐसा कार्य मूर्तिपूजा के बराबर है। हम देखते हैं कि इस संसार में लाखों लोग अच्छी वस्तुओं से ही नहीं, बल्कि बुरी वस्तुओं से जैसे शराब, विभिन्न तरह के ड्रग्स, बीडी, सिगरेट इत्यादि से दिल लगा बैठते हैं और इसका सेवन शुरु करने के बाद वह इस बुरी आदत से स्वंय छुटकारा पाने में असमर्थ हो जाते है। वह उनके जीवन पर, उन पर हावी हो जाता है और उनके शरीर के साथ–साथ उनकी आत्मा को भी नष्ट कर सकता है। छुटकारा पाने का लेकिन एक उपाय है – ईश्वर की शरण में आकर उनके वचनों को सुनना व स्वंय भी इन नशीली वस्तुओं के सेवन से होने वाले नुक्सान का एहसास रखते हुए इनसे छुटकारा पाने की पूर्ण इच्छा रखना। ईश्वर की कृपा के बगैर कोई व्यक्ति बुरी आदतों या बुरी संगति से छुटकारा पा नहीं सकता। ऐसे हज़ारों लोग, जो जीवन–धाम में आये, जिनमें से कई लोगों का जीवन पूरी तरह तहस–नहस हो चुका था, वे ईश्वर के वचन की शक्ति द्वारा इन नशीली वस्तुओं के सेवन से मुक्त हो गये, बुरी आदतों से मुक्त हो गये और फिर कभी पाप या प्रलोभन में नहीं गिरे। Praise the Lord! ईश्वर को धन्यवाद! कई टूटे परिवार जुड गये, निराशापूर्ण जीवन आशमय बना, अशांति, बैर, लड़ाई–झगडा इत्यादि सब परिवार में समाप्त हो गया और इन बातों का साक्ष्य कई लोगों ने स्वंय जीवन–धाम में स्टेज पर चढ़कर दिया है। यह उनका अनोखा अनुभव साक्ष्य है – उनके नये जीवन की शुरुआत है। ईश्वर की कृपा द्वारा प्रभु येशु में वह एक नया, पवित्र, प्रेमपूर्ण व शान्तिपूर्ण जीवन प्राप्त करते है।

पवित्र बाइबिल हमें इस पाप (बुरी आदत) के विषय में कई बार समझाता है:

"जो व्यक्ति असंयम से अंगूरी पीता है, वह क्रोध एवं झगडा किया करता और

"प्रभु ! मेरे ईश्वर ! तूने हमारे लिए कितनी महान् योजनाँए और कार्य सम्पन्न किये। तू अतुलनीय है। यदि मैं तेरे कार्यों की घोषणा और वर्णन करना चाहूँ, तो वे इतने अधिक हैं कि मैं उनके वर्णन में असमर्थ हूँ।"(स्तोत्र 40:6)

उसकी आत्मा कटुता से भर जाती है। नशा मूर्ख का क्रोध भड़काता और उसे हानि पहुँचाता है। वह उसकी शक्ति घटाता और उसके घाव बढ़ाता है।"**(प्रवक्ता31:38-40)**

"अंगूरी उपहास करती और मदिरा उपद्रव मचाती है। जो उनके कारण भटकता है, वह बुद्धिमान नहीं।" **(सूक्ति 20:1)**

"शराबियों की संगति मत करो और न उन लोगों की जो माँस बहुत खाते हैं; क्योंकि शराबी और पेटू दरिद्र होते हैं; उनींदापन उन्हें चिथड़े पहनाता है।"**(सूक्ति23:20-21)**

अब पवित्र बाइबिल में एक मद्यप का चित्रण पढ़ें: "कौन दुःखी है ? कौन शोक मनाता है ? कौन झगड़ा लगाता है ? कौन शिकायत करता है ? कौन अकारण घायल हो जाता है ? किस की आँखें लाल हैं ?

यह उन की दशा है जो देर तक अँगूरी पीते हैं; जो मिश्रित अगूँरी के प्याले चखते रहते हैं। लाल–लाल अँगूरी पर दृष्टि मत लगाओ, जो प्याले में बुदबुदाती है। वह पीते समय मधुर लगती है किन्तु अन्त में साँप की तरह डँसती और करैत की तरह विष उगलती है। तुम्हारी आँखें बड़ा विचित्र दृश्य देखेंगी और तुम उल्टी–सीधी बातें करोगे। तुम खुले समुद्र पर यात्रा करने वाले व्यक्ति के समान होगे जो मस्तूल के शिखर पर सोया हुआ है। तुम कहोगे, "उन्होंने मुझे मारा, किन्तु मुझे चोटे नहीं लगी। उन्होंने मेरी पिटाई की किन्तु मुझे इसका पता नहीं चला। मुझे कब होश होगा ? तब मैं फिर पिऊँगा।"

(सूक्ति23:29-35)

मद्यपों का अन्जाम :

जो नशीली वस्तुओं को इस्तेमाल करते हैं, जो अपने जीवन की चिन्ताओं से मुक्त होकर एक दूसरी दुनिया में खो जाना चाहते हैं, जो खुशी–आराम और नशे मे धुत होकर मौज उड़ाने को जीवन मानते हैं, उन लोगो को प्रभु धिक्कारते हैं। **(सन्त लूकस 6:24-26)** नबी इसायाह के ग्रन्थ में हम पढ़ते हैं : "धिक्कार उन लोगों को जो बड़े सवेरे से मदिरा पीते और संध्या को देर तक अंगूरी पीकर मतवाले हो जाते हैं। वे सितार, सारंगी, डफ और मुरली बजाते हुए दावतें उड़ाते और मदिरा पीते हैं, किन्तु वे प्रभु के कार्यों पर ध्यान नहीं देते और उसके हाथ की कृतियों का आदर नहीं करते। मेरी प्रजा अपनी अवज्ञा के कारण निर्वासित की जायेगी। कुलीन लोग भूखों मरेंगे और जनसाधारण प्यास से सूख जायेगा। तब अधोलोक अपना मुँह फैलायेगा और अपने जबड़े पूरे–पूरे खोलेगा। विलासप्रिय कुलीन लोग और जनसाधारण, दोनों उस में उतरेंगे।"**(इसायाह5:11-14)**

यही नहीं, नये विधान में सन्त पौलुस भी कहते हैं : "धोखे मे न रहें ! व्यभिचारी, मूर्तिपूजक, परस्त्रीगामी, लौण्डे और पुरुषगामी, चोर, लोभी, **शराबी**, निन्दक और धोखेबाज़ ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे।"

(1 कुरिन्थियों6:9-10)

इस तरह हम जान गये कि शराबी ईश्वर के स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं कर पायेंगे क्योकि उन्होंने अपने शरीर को, जो पवित्रात्मा का मंदिर है,**(1 कुरिन्थियों6:19)** जिसपर उनको अधिकार नहीं था, दूषित किया व अपवित्र कर दिया और कोई भी अपवित्र व्यक्ति या वस्तु स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता, जहाँ अति पवित्र ईश्वर का साम्राज्य है। ऐसे दूषण से सभी दूर रहें और ईश्वर के सम्मुख पश्चाताप कर पवित्रता की साधना करें, पवित्रात्मा को प्राप्त कर प्रभु में लीन हो जायें। और यह कृपा केवल प्रभु येशु ही दे सकते हैं, जो यह कहते हैं – **"यदि पुत्र (प्रभु येशु) तुम्हें स्वतन्त्र बना देगा, तो तुम सचमुच स्वतन्त्र होंगे।"** और यह कि, **"मैंने तुम लोगों को जो शिक्षा दी है, उसके कारण तुम शुद्ध हो गये हो।" (योहन8:36; 15:3)**

केवल प्रभु ही हमें सच्ची स्वतन्त्रता दे सकते हैं व हमें पूर्णता और पवित्रता की ओर ले जा सकते हैं। आज परिपूर्णता के लिए, सन्त बनने के लिए ही हमें प्रभु निमन्त्रण देते हैं, और हमारे लौटने का इन्तज़ार कर रहे हैं। **"और देखिए, अभी उपयुक्त समय है, अभी कल्याण का दिन है।" (2 कुरिन्थियों 6:2)**

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

इन सबको प्रभु ने अद्‌भुत रुप से जोड़ो के दर्द (गठिया) से मुक्त किया

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा। मैं, शारदा (उम्र–30 वर्ष), (चित्र में बायी ओर), पिछले 3 साल से हाथ व पैरों के सभी जोड़ो में दर्द व अकड़न से बहुत दुःखी थी व लाचार थी। पहले हिन्दु राव अस्पताल में इलाज 2 साल तक हुआ, घुटनों पर इन्जेक्शन लगाया। बाद में उन्होंने जवाब दे दिया। (AIIMS) मेड़िकल में दिखाने पर ऑपरेशन करवाने की सलाह दी गई पर नहीं किया क्योंकि ऑपरेशन से मेरे घुटनों की हड्डी बदली जानी थी। (खर्चा 3 लाख रुपये) फिर गंगा राम अस्पताल में 4 महीने से इलाज चल रहा है, घुटनों पर इन्जेक्शन भी लगवाया। कहीं भी इलाज स्थायी आराम न दे सका। किसी सज्जन के बताने पर मैं जीवन–धाम आने लगी। पहले इतवार ही मुझे आराम मिल गया और मैं बिना लाठी के या किसी की मदद के चल कर स्टेज पर चढ़ गई। अब मुझे चलने फिरने में आराम व शरीर हल्का महसूस होता है। **शारदा, दिल्ली**

ii) मैं, निर्मला मिंज (उम्र 30 वर्ष) (चित्र में मध्य में), जन्म से ही शरीर में दर्द व मुख्य रुप से पीठ दर्द से परेशान थी। इस के कारण सिर दर्द व पेट दर्द भी होता था। इलाज पर हज़ारों रुपये खर्च कर दिये, पर दर्द वहीं का वही बना रहा। मेरे शरीर में खून की भी कमी बनी रहती थी। एक महिला के कहने पर मैं आज "जीवन–धाम" में दूसरी बार आई हूँ और प्रभु ने आज ही मुझे ऐसा सुख व आराम दिया है जिसे पूरी जिन्दगी में मैंने पहले अनुभव

"मैं उन लोगों को अपने पवित्र पर्वत तक ले जाऊँगा। मैं उन्हें अपने प्रार्थनागृह में आनन्द प्रदान करुँगा। मैं अपनी वेदी पर उनके होम और बलिदान स्वीकार करुँगा; क्योंकि मेरा घर सब राष्ट्रों का प्रार्थनागृह कहलायेगा।"(इसायाह 56:7)

नहीं किया। अब मैं उठ–बैठ सकती हूँ, मैंने दर्द की गोली लेनी भी छोड दी है और चलने से मुझे अब थकान भी महसूस नहीं होता। आल्लेलूया! प्रभे को लाखो बार धन्यवाद!

निर्मला मिंज, झारखण्ड

iii) मैं, माया शर्मा (उम्र 60 वर्ष) (चित्र में दायी ओर), पिछले 13 साल से जोड़ों के दर्द से परेशान थी। रोज़ गोली खाती थी और घर पर डण्डे के सहारे से चलती थी। पहले एस्कॉर्ट्स में इलाज चला, बहुत अभ्यास किये। फिर सर्वोदय अस्पताल में इलाज चला जहाँ पर डॉक्टर ने मेरे घुटनों की हड्डी बदलने के लिए ऑपरेशन करवाने को कहा। पर मैंने नहीं करवाया। घर का कोई काम मैं नहीं कर सकती थी। सभी जोड़ों में सूजन आ गई थी। किसी ने कल ही मुझे जीवन–धाम के बारे में बताया और आज मैं यहाँ पहली बार आई हूँ। प्रभु ने मुझे आज ही दर्द से मुक्ति दे दी व चलने की शक्ति दे दी है। मैं बिना किसी के मदद के गवाही देने के लिए स्टेज पर भी चढ़ गई। प्रभु येशु की स्तुति व धन्यवाद! **माया शर्मा, फरीदाबाद**

"सब मनुष्य तेरे पास आते हैं, क्योंकि तू प्रार्थनाएँ सुनता है।...अपने न्याय के अनुरुप तू अपने चमत्कारों द्वारा हमारी प्रार्थना का उत्तर देता है। तू हमारा उद्धारक ईश्वर है, समस्त पृथ्वी और सुदूर द्वीपों की आशा।" (स्तोत्र 65:3,6)

येशु ही मेरे सबसे बड़े वैद्य और उनके वचन मेरी दवा हैं

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, कालीचरण (उम्र–44 वर्ष), पिछले दस –बारह साल से पेट में गैस की शिकायत के कारण परेशान था। सभी डॉक्टरों से इलाज करवाके देख लिया पर कोई स्थायी आराम नहीं मिला। साथ ही पिछले पाँच वर्ष से मेरे हाथों की नसों व जोड़ो में दर्द बना रहता था। डॉक्टर ने गठिया की बीमारी बताई। लेकिन कहीं से भी कोई इलाज पूर्ण दर्द निवारण नहीं दे सका। पिछले साल एक नई परेशानी और खड़ी यह हुई कि मेरे पैर की एड़ी की हड्डी बढ़ने लगी जिससे मुझे दर्द होता व पैर जमाकर नीचे नहीं रखा जाता था। इन सब के कारण मेरा काम करना मुश्किल हो गया था। एक दिन मेरे एक पड़ोसी ने जीवन–धाम की रोग–चंगाई प्रार्थना के विषय में बताया। तब से मैं यहाँ (पिछले 3 महीने से) हर इतवार प्रार्थना में भाग ले रहा हूँ। प्रभु येशु ने मेरी हर बीमारी को अपने वचन द्वारा चंगाई दे दी है। केवल मुझे ही नहीं, मेरी पत्नी बीना देवी को भी 15 साल पुरानी पेट में गैस की शिकायत से छुटकारा मिला है। अब हमें केवल प्रभु येशु पर ही भरोसा है जो हमारी हर बीमारी से हमें मुक्ति दिला सकते है।

कालीचरण, फरीदाबाद

"उसे किसी जड़ी-बूटी या लेप से स्वास्थ्यलाभ नहीं हुआ, बल्कि प्रभु! तेरे शब्द ने उस चंगा किया था।" (प्रज्ञा 16:12)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) लूकस रचित सुसमाचार
b) अध्याय 4-7

प्रस्तुत प्रश्न **सन्त लूकस** के सुसमाचार के अध्याय **4 से 7** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से (**क, ख, ग और घ**) चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाली वाक्याशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) प्रभु ने इनमें से किन लोगों को धिक्कारा है?
क) जो तृप्त हैं, ख) जो नम्र हैं,
ग) जो धनी हैं, घ) जो अभी हँसते हैं

2) प्रभु ने इनमें से किन को विश्राम दिवस में चंगा किया था ?
क) अर्द्धांगरोगी को, ख) पेत्रुस की सास को
ग) कोढ़ी को, घ) सूखे हाथ वाले को

3) सिमोन के साझेदार कौन थे और उन्हें सिमोन के साथ प्रभु ने कहाँ से बुलाया था ?
क) याकूब और योहन, गेनसेरत से
ख) याकूब और लेवी, कफरनाहूम से
ग) यूदस और अन्द्रेयस, गलीलिया से
घ) मत्ती और योहन, नाज़रेत से

4) पापिनी स्त्री ने प्रभु के पास आकर क्या–क्या किया था ?
क) प्रभु के सिर पर तेल लगाया था,
ख) उनके पैर अपने आँसुओं से धोये,
ग) उनके पैरों पर इत्र लगाया,
घ) उनके लिए खाना परोसा

5) प्रभु येशु ने इनमें से किनको आर्शीवचन दिये?
क) जो अभी रोते हैं, ख) जो दरिद्र हैं,
ग) जो भूखे हैं, घ) जो मेल कराते हैं

6) खाने–पीने के विषय में फरीसी प्रभु येशु के बारे में क्या–क्या कहते थे ?
क) "वह समय समय पर उपवास करते हैं"
ख) "वह पेटू और पियक्कड हैं"
ग) "वह पापियों और नाकेदारों के साथ खाते हैं"
घ) "वह विश्राम के दिन कुछ नहीं खाते"

7) प्रभु निर्जन प्रदेश में कितने दिन रहे, कितनी बार शैतान ने उनकी परीक्षा ली और प्रभु ने कब कहा – "मनुष्य रोटी से ही नहीं जीता है" ?
क) 50, 3, जब शैतान ने प्रभु को मन्दिर से कूदने को कहा
ख) 40, 3, जब शैतान ने उन्हें पत्थर को रोटी बनाने को कहा
ग) 30, 4, जब शैतान ने उन्हें उसकी आराधना करने को कहा
घ) 45, 1, जब शैतान ने उन्हें मारने की धमकी दी।

8) सिमोन, याकूब और यूदस नाम से प्रभु के 12 शिष्यों में कितने शिष्य थे ?
क) एक, एक, एक, ख) एक, दो, एक
ग) दो, दो, दो, घ) तीन, दो, दो

6) मारकुस रचित सुसमाचार
a) अध्याय 1-3

1) क) और घ) **(1:42-45)**
2) ख) **(3:23-31, 3:32-38)**
3) ग) और घ) **(2:27, 34-35; 1:67-79)**
4) ग) और घ) **(3:12-14)**
5) ग) **(1:5)**
6) ख) **(3:1)**
7) ख) और घ) **(3:23-38)**
8) ख) **(1:63-64)**

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं ?
क्या आप दुःखी.....हैं ?
क्या आप रोगी.....हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है ?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रात:9.00 बजे से12.30 बजे तक 'जीवन-धाम'696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"मैं सभी भाषाओं के राष्ट्रों को एकत्र करुँगा। वे मेरी महिमा के दर्शन करने आयेंगे।" (इसायाह66:18)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.